पशुओं में बाह्य एवं अन्तःपरजीवी : हानि एवं बचाव

डा0 राज किशोर शर्मा,
सहायक प्राध्यापक, परजीवी विज्ञान विभाग
बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना

बाह्य परजीवी : हानि एवं बचाव

बाह्य परजीवी का संक्रमण शरीर के बाहरी अंगों एवं त्वचा पर होता है, यह मुख्य रूप से चमोकन, माइट्स, मक्खियों, जूँ एवं जोंक से होता है।, चमोकन बहुत से प्रोटोजोआ जनित बिमारियों के वाहक भी होते हैं।

हानि – बाह्य परजीवी पशु स्वास्थ्य को काफी प्रभावित करते है। संक्रमण के उपरान्त पशुओं में खुजलाहट एवं बेचैनियों के कारण खाने की क्षमता कम हो जाती है, परिणामस्वरूप पशु का स्वास्थ्य निरन्तर गिरने लगता है। लम्बे अवधि तक रक्त चूसने से शरीर में रक्त की कमी हो जाती है, तत्पश्चात पशु दुर्बल हो जाता है। इनसे त्वचा की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है, दुधारू पशुओं में दूध की कमी हो जाना एवं कृषि कार्य करने वाले पशुओं की शक्ति क्षीण होना तथा शरीर के भार एवं वृद्धि के विकास में लगातार कमी हो जाना अन्य प्रमुख लक्षण हैं।

बचाव –

(1) पशु शरीर, पशु आवास एवं बैठने के स्थान पर 5 प्रतिशत गैमैक्सिन घोल या डी0डी0टी0 का छिड़काव करना लाभदायक होता है।

(2) Pour on, Tick out या Rid जैसे प्रभावकारी दवाइयॉ चमोकन के लिए 2 मी0ली0, माइट्स के लिए 4 मि0ली0, जूँ के लिए 1 मि0ली0 तथा मक्खी के लिए 2 मि0ली0 एक लीटर पानी में मिला, घोल बनाकर एवं हाथों में ग्लब्स पहनकर, पशु शरीर पर रगड़कर लगाना लाभकारी होता है।

(3) टेटमोसोल साबुन भी काफी फायदेमंद होता है।

इन दवाओं को लगाते समय निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है –

(क) दवा लगाते समय या छिड़काव करते समय औषधि ऑख, कान, नाक और मुँह पर नहीं पड़नी चाहिए।

(ख) दवा छिड़काव या लगाने के समय पशु के मुख पर जाली लगा देना चाहिए, जिससे पशु उसे चाट न सके।

(ग) दवाओं का घोल या छिड़काव चारा, दाना, घास या किसी खाध सामग्री पर नहीं पड़ना चाहिए।

अन्तः परजीवी : हानि एवं बचाव

पशु स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले अन्तः परजीवी मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं

(1) कृमि – गोल कृमि, फीता कृमि एवं पत्ती कृमि जो पाचन तंत्र एवं पाचन क्रिया से जुड़े अन्य अंगो को प्रभावित करते हैं, और रोगग्रस्त पशुओं की शक्ति क्षीण कर देते हैं पशु दुर्बल हो जाते हैं और ससमय उपचार नहीं होने पर पशुओं की असमय मृत्यु हो जाती है, पाचन तंत्र को प्रभावित करने वाले कुछ प्रोटोजोआ भी है जैसे कॉक्सिडीया एवं अमीबा आदि। इनके संक्रमण से उत्पादन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जैसे– दुग्ध की उत्पादक्ता कम होना, मांस की गुणवत्ता प्रभावित होना, अंडे का कवच मुलायम हो जाना एवं समय से पहले उल का गिरना आदि।

बचाव –

(क) घोंघे बहुत से कृमि जनित रोगों के वाहक होते है, जल जमाव वाले क्षेत्रों में कॉपर सल्फेट (तुतिया) का छिड़काव कर इन्हें नष्ट किया जा सकता है।

(ख) पशुओं को चारा धोकर खिलाना चाहिए एवं स्वच्छ किटाणु मुक्त पानी पिलाना चाहिए।

(ग) पशुओं को दलदली या जल जमाव वाले क्षेत्रों में कभी नहीं चराना चाहिए।

(घ) पशुओं को चारा खिलाना लाभदायक होता है।

(ड0) रोग ग्रस्त पशुओं को स्वस्थ पशुओं के समूह से अविलम्ब अलग कर देना चाहिए।

(च) पशु मल जॉच के उपरांत सक्रमित कृमि का प्रकार पता चल जाने के पश्चात् नजदीक के पशु चिकित्सक के परामर्श पर कृमि नाशक दवाओं द्वारा चिकित्सा की दिशा में पहल करना चाहिए।

(2) रक्त प्रोटोजोआ –

रक्त प्रोटोजोआ पशुओं के रक्त में संक्रमण फैला कर उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। इनमें ट्रिपेनोसोमा बबेसिया, थेलेरिया, एवं एनाप्लाज्मा मुख्य रक्त प्रोटोओजा है।

हानि –

(1) सर्रा (ट्रिपेनोसोमा) –संक्रमित पशु तेज बुखार से ग्रसित हो जाते है। उत्तेजित होकर इधर उधर भागने लगते है एवं पागलों जैसा व्यवहार करने लगते हैं। पशु अंधा सा दीवार से सर टकराता है एवं कॉपता एवं थरथराता रहता है।, पशु पागुर करना छोड़ देता है एवं खाना पीना कम कर देता है। किसी किसी पशु की ऑख लाल हो जाती है।

(2) खून पेशाब (बबेसिया) – पशुओं के पेशाब का रंग लाल हो जाता है पशु तीव्र ज्वर से पीड़ित रहता है, पशु सुस्त एवं कमजोर हो जाता है। दूध कम एवं तीखे स्वाद वाला हो

जाता है, संक्रमित पशुओं में कब्ज हो जाता है एवं खाने पीने की रूचि कम हो जाती है। ससमय उपचार नहीं होने पर पशुओं की मृत्यु हो जाती है।

बचाव :

(क) रक्त जॉच के उपरान्त सर्रा, बबेसिया, एवं थेलेरिया जैसे प्रोटोजोआ की चिकित्सा पशु चिकित्सक के सलाह पर Berenil या Triquin जैसे दवाओं से किया जाता है।

(ख) Belamyl की 10 मि0ली0 की खुराक मांस में देना लाभप्रद होता है।

(ग) Himalyan Batisha 50–60 मि0ली0 रोज खाने के साथ दिया जाता है।

(घ) Rumenton Bolus 2–2 बोलस सुबह/शाम तीन दिनों तक दिया जाता है।

(ड0) आवश्यकतानुसार Ca-borogluconate की 1–2 बोतल (500–1000) मि0ली0 नस में चढ़ाना चाहिए।

(3) ट्राइकोमोनिएसिस – यह परजीवी पशु प्रजनन अंग को संक्रमित कर प्रजनन को प्रभावित करते है, जिससे गर्भपात हो जाता है एवं प्रजनन अंगों से बदबुदार मवाद निकलता है।

बचाव –

ट्राईकोमोनिएसिस की कोई विशेष चिकित्सा उपलब्ध नहीं है पर संक्रमण से बचने के लिए प्राकृतिक मैथुन के बजाय कृत्रिम गर्भाधान का प्राथमिकता देनी चाहिए।